International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.7 No.5 May – June 2020

चंद्रकांता के अंतिम साक्ष्य में दांपत्य चित्रण

डॉ. महिपती जगन्नाथ शिवदास

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

सदगुरू गाडगे महाराज कॉलेज, कराड

साहित्यकार चंद्रकांता का जन्म 1 सितंबर, 1938 में कश्मीर के श्रीनगर में एक संपन्न परिवार में हुआ। इन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता संग्रह की डेढ़ दर्जन से अधिक सृजनात्मक कृतियों का निर्माण किया। उनकी कतीपय रचनाएँ समय-समय पर चर्चित और पुरस्कृत भी हो चुकी हैं। उनके साहित्य रचना का आधार स्वयं अनुभव और यथार्थ रहा है। प्रस्तुत रचनाओं के पात्र मानव मन के साथ जुड़े रहते है। उन्होंने किसी के प्रभाव में आकर, कभी किसी के मांग के आधार पर अपना लेखन कार्य संपन्न नहीं किया। चंद्रकांता ने हमेशा सामान्य व्यक्ति के सुख-दु:ख को प्राथमिकता देने का काम किया है। भारत देश का स्वर्ग कहे जानेवाले कश्मीर में आतंकवादी घटनाएँ, महिलाओं पर होनेवाले अत्याचार, सामाजिक संबंध, व्यवस्थागत विसंगतियाँ, सांप्रदायिक सौहार्दता, समन्वयवादी संस्कृति, नारी अस्मिता जैसे बिंदूओं को अपने साहित्य का आधार बनाया है।

उनका कथा साहित्य परंपरागत सच्चाईयों को स्पष्ट करता है। स्त्री-पुरूष के पारिवारिक संबंध, विवाह संबंधी बदलते मूल्य, बढ़ती हुई स्वच्छंद वृत्ति, भ्रष्ट राजनीति, सांप्रदायिकता आदि पहलूओं को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। चंद्रकांता ने अपनी जन्मभूमि कश्मीर की एक लंबे अरसे से चली आतंकवादी समस्या को हृदयद्रावकता के साथ चित्रित किया है। कश्मीर में हत्याकांड, अत्याचार, शरणार्थियों की समस्या अत्यंत भयानक हो चुकी है। अपने घर से निष्कासित होकर वे लोग अपमान, घृणा और अन्यायग्रस्त जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। लेखिका का विचार है कि आतंवाद यह कोई अच्छी प्रेरणास्पद बात नहीं है कोई एक व्यक्ति या जवान आंतकवाद को समाप्त

नहीं कर सकता। आतंकवाद एक मानसिक बीमारी है, इसके पीछे कट्टर धार्मिकता भरी हुई नजर आती है। इस गुट में होनेवाले लोगों का कहना होता है कि हमारा मुल्ख स्वतंत्र होना चाहिए हम किसी दूसरे के दबाव में जीना नहीं चाहते। हमारा अलक अस्तित्व है।

चंद्रकांता के साहित्य का उद्देश्य समाज सुधार रहा है। यह लेखिका स्वार्थ हेतु सृजन नहीं करती वह हमेशा विकास का प्रभाव बढ़ेगा इस दृष्टि से साहित्य लेखन करती है। पाठकों को आकर्षित करने के लिए अपनी पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने हेतु वह हरकत नहीं की। लेखकीय आदर्श संस्कार को उन्होंने आगे लेकर जाने का कार्य किया है। वह एक महिला रचनाकार होने के नाते महिला लेखन, पुरूष लेखन ऐसा बदलाव नहीं चाहती । डॉ. अमोल पालकर अपनी रचना चंद्रकांता का कथा साहित्य समकालीन परिवेश तथा संदर्भ में लिखते है कि, "स्त्री को वह सामाजिक, पारिवारिक सृष्टि में सक्षम, विवेकशील और अपने कर्तव्यों के प्रति सजग मानती है। वह मुनष्य मुक्ति की कामना करती हैं। जिसमें स्त्री-पुरूष दोनों रहते हैं। स्त्री-पुरूष को समान हकदार समझती है। पुरूष की तरह स्त्री को स्वतंत्र चेता और विशिष्ट माना है।"[1] साहित्यकार चंद्रकांता पुरूष और नारी लिंग भेद से परे रहकर विचार करती रहती है।

चंद्रकांता के साहित्य में दांपत्य जीवन का चित्रण:

दांपत्य जीवन ही परिवार का आधार एवं उसके विकास का माध्यम माना जाता है। भारतीय समाज में पति-पत्नी दोनों को परिवार का अविभाज्य अंग माना गया है। दांपत्य जीवन सुखमय, सफल हो इस हेतु पति-पत्नी में पारस्पारिक प्रेम, साहचर्य, समझदारी, एक दूसरे के प्रति समर्पण विचार रहना महत्वपूर्ण है। 'अर्थांतर' उपन्यास के चरित्र विजय और कम्मो का दांपत्य जीवन सुखी होने के कारण उनका रोमान्स और शरीर की तृप्ति है।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की मीना मौसी दोबारा विवाह के बंधन में बंधकर असफल दांपत्य जीवन की शिकार होती है। मीना का पहला विवाह उम्र के बारहवें साल में पचास साल के रंडुवे लाला

के साथ होता है, लाला के बेटे मीना की उमर से भी बडे है। यह लडके मीना को माँ कहने के लिए तैयार नहीं है। लाला के लडकों का मीना के प्रति देखने का दृष्टिकोण ठीक नहीं है। लाला मीना की उम्र कम होने की वजह से लाला उसे चाची के पास छोडकर आते है। मीना का दूसरा विवाह जगन के साथ होता है। कुछ दिन दोनों साथ रहकर दांपत्य जीवन निभाते है। मीना पति के अत्याचारों से डरकर ईश्वर की प्रार्थना करती है कि "जगन पर नशे का खुमार रातभर बना रहे। वह नशे में रातभर खर्राटे मारता रहे और मुझे अकेली रहने दे। तन-मन को थोडी राहत मिले"[2] यह पति जगन मीना का जीवन के अंत तक साथ नहीं देता बल्कि लंपट मनदसिंह के द्वारा एक कोठे पर बेचने का काम करता है।

इस उपन्यास में सेवारत नारी का विवेचन किया हुआ मिलता है। उपन्यास की कैलाश बी.ए., बी.एड. करने के बाद एक स्थानीय हायस्कूल में अध्यापन का कार्य करती है। उसके पति रमेश नौकरी करने हेतु दूसरे शहर में होने के कारण इतवार और छुट्टियों के दिनों में ही मिलते है। कैलाश नौकरी करते हुए भी परिवार के दायित्व का निर्वाह करती है। पति की आवश्यकताओं को पत्नी धर्म के समान पूरा करती है। वह पढ़ी-लिखि और कामकाजी होने के कारण अंतर जातीय प्रेम विवाह कर सकी है। रमेश और कैलाश का अंतरजातीय विवाह होने पर उनके परिवारवाले उनसे संबंध तोड देते हैं। तब कैलाश सोचती है कि "यह भी हमारे समाज का रोग है मीना। माता-पिता तमाम उम्र बच्चों की खुशियां चाहते हैं, पर ऐन वक्त परंपरागत विश्वास और रूढ़ नैतिकताएँ उन्हें जकड लती है। वे खुद का आसानी से मुक्त नहीं कर पाते।"[3] 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की कैलाश आधुनिक विचारों से प्रेरित नारी है। वह पति रमेश के साथ परंपरागत मान्यताओं को ठुकराकर पति एकनिष्ठ रहती है। नारी अपने अधिकार और महत्व के प्रति सचेत हो गई है। वह भी पुरूष के कंधे से कंधे मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में कार्यरत रही है जिससे उसकी हीन भावना नष्ट हो गई। समय-समय पर नारी केा उचित सम्मान मिल रहा है। आज के नवयुग में नारी हर एक क्षेत्र में आगे है विश्व की सृजनात्मक रचना में आगे खडी हो रही है।

'अंतिम साक्ष्य' में अनमेल विवाह का चित्रण:

उपन्यास में अनमेल विवाह की बात चित्रित है। मीना मौसी के चाचा-चाची ने धन के लालच में पचास बरस के रंडुवे लाला से विवाह कर दिया जाता है। लाला के लडके भी मीना मौसी से बड़े है। लाला का छोआ बेटा मीना मौसी को गिद्ध की दृष्टि से देखता है। जो मीना मौसी के साथ शरीर संबंध रखना चाहता है। यह लाला मीना पर तरस खाकर उसे चाचा-चाची के पास वापस छोड आता है। मीना की चाची लाला को फटकारती है तो लाला कहता है, "अब बिलकुल होश-हवास में हूँ तुमने लडकी की उम्र बीसे क साल बताई थी। वह तो बारह साल से उपर नहीं लगती।"[4] स्पष्ट है लाला कहता है कि चाची ने हमें गलत जानकारी देकर कटवाया है। इसमें न मीना सुखी रहती है न लाला अपने बेटों की हरकतों से।

'अंतिम साक्ष्य' में विवाहोत्तर संबंध:

हमारे भारतीय समाज की आवश्यकता विवाह व्यवस्था है। विवाह एक पवित्र रिवाज रहा है। विवाह समय स्त्री-पुरूष दोनों आजन्म एक दूसरे के साथ रहकर प्रेम संबंध निभाने की प्रतिज्ञा करते है। विवाह के बाद उसी परिवार में अगर किसी तीसरे व्यक्ति का प्रवेश होता है तो उस पवित्र रिश्ते में कठिनाइ पैदा होती है। इस तीसरे व्यक्ति के प्रवेश से पति-पत्नी में टुटन, पराए व्यक्ति के बारें में यौन आकर्षण, संतान उत्पत्ति जैसे कारण होते हैं। आज के युग में स्त्री शिक्षा तथा नौकरी हेतु परिवार से दूर रहने लगी है। परिवार में वह नारी के सहारे हेतु खोज करती जिसका परिणाम प्रेम संबंधों में परिवर्तित होता है।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के बाऊजी और बीजी घर गृहस्थ में सुखी थे। किंतु बाऊजी के मन का कोई अंजाना कोना खाली रहता है। परिणामत: वे मीना की ओर आकर्षित हो जाते है। मीना बार-बार समझाती है कि तुम दीदी के पास लौट जाओ किंतु बाऊजी के पीछे जुडने की मानसिकता में नहीं रहते। बाऊजी के इन संबंधों के कारण पत्नी बीजी टूट जाती है और उसका अंत होता है। बीजी की

मृत्यु के पश्चात बाऊजी मीना को अपने घर ले जाते हैं। पत्नी की कमी पूरी करना चाहते है, "तुम्हें आज भी किसी सुख का लालच देकर साथ चलने के लिए नहीं कह रहा। बस थोडा सा सहारा चाहिए। मुझ से ज्यादा खिसकती ईटोंवाले मेरे घर को।"[5]

'अंतिम साक्ष्य' यह चंद्रकांता का प्रारंभिक उपन्यास है। भाषा-शैली और संवाद योजना की दृष्टि से प्रौढ है। नायिका मीना- मौसी लगभग न के बराबर बोलती है। उनके आँसू ही सब कुछ कह देते हैं। छोटे-छोटे संवाद कथा प्रवाह को गति देते है। छोटे-छोटे संवाद भी जम्मू जैसे हिंदी की याद दिलाते हैं। जिनमें आँचलिकता के साथ उर्दू और हिंदी का मिश्रण है। यह शब्द पूरे उपन्यास में मिलते है। स्पष्ट है यह चंद्रकांता की कृति पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करती है।

संदर्भ सूची:

1. कासार डॉ.अमोल –चंद्रकांता का कथा साहित्य (वैचारिकी संकलन, मई 1997)पृ. 67
2. चंद्रकांता – अंतिम साक्ष्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1990, पृ. 26
3. पूर्ववत- पृ. 28
4. पूर्ववत- पृ. 15
5. पूर्ववत- पृ. 45